श्रद्धा सुमन

सुमनलता शर्मा

जय श्री ठाकुरजी

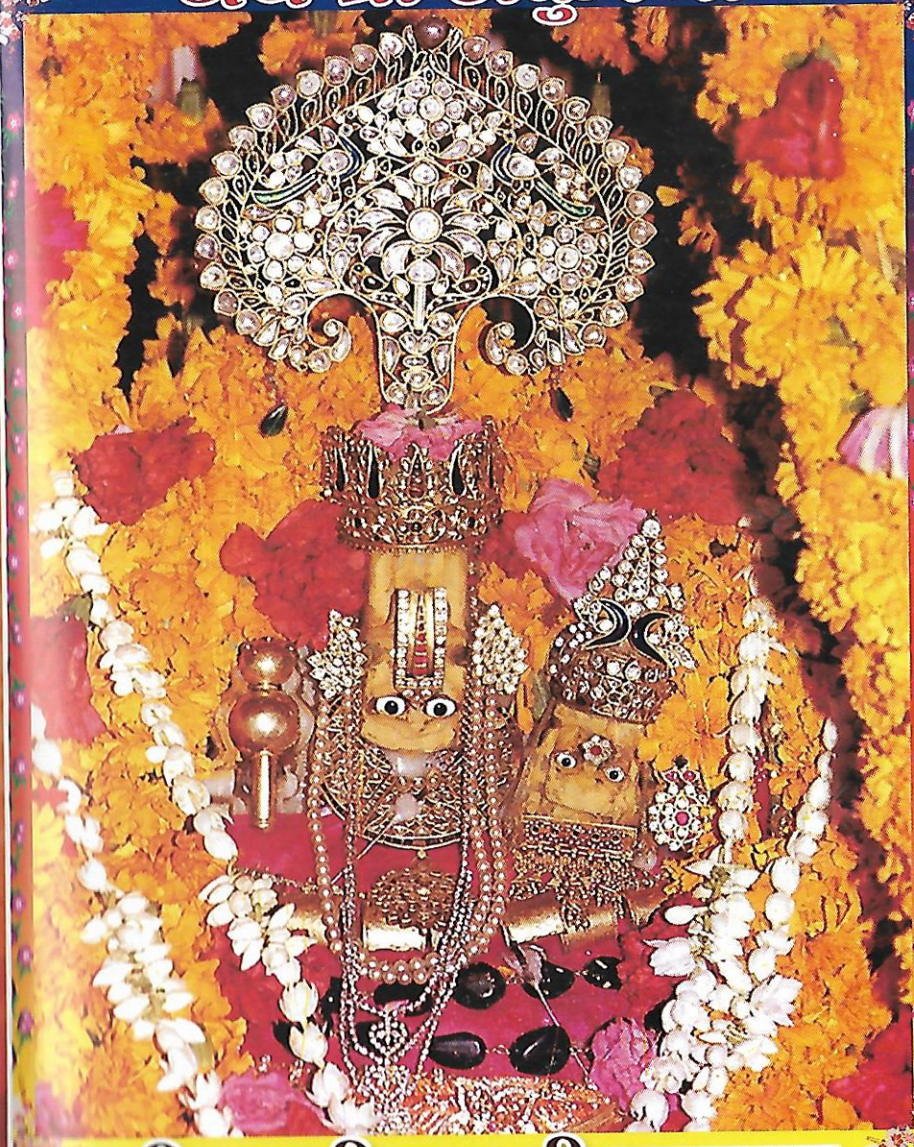

श्री लक्ष्मीनाथजी महाराज

फतेहपुर शेखावाटी सीकर, राजस्थान

:: प्रेषक ::

एडवोकेट कुन्दन शर्मा

चिमणियों का मोहल्ला, फतेहपुर - शेखावटी (सीकर) राजस्थान

हाल - जिला एवं सत्र न्यायालय, सूरत - गुजरात एवं हाईकोर्ट गुजरात. मो. 70481 87962

श्रद्धांजलि

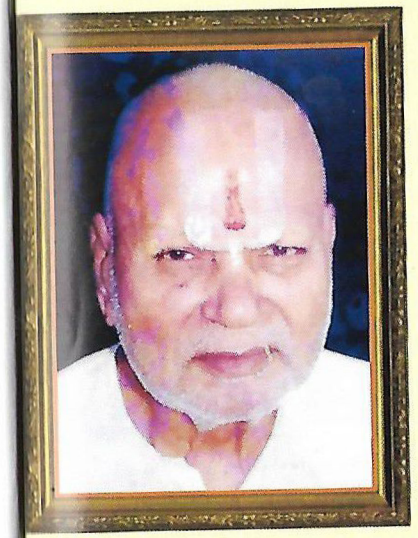

स्व. श्री राधेश्यामजी शर्मा
(खेड़वाल)

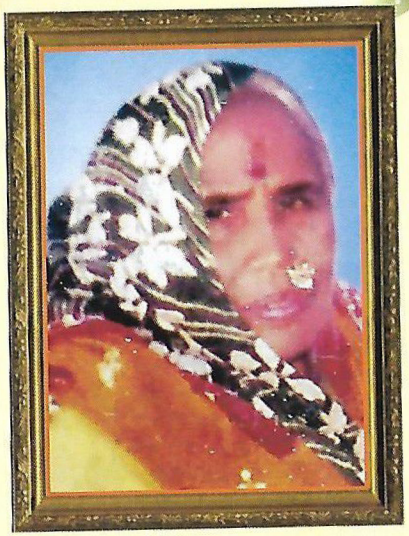

स्व. श्रीमती रुकमणीदेवी शर्म
(खेड़वाल)

यह पुस्तक अपने
पूजनीय दादाजी स्व. श्री राधेश्यामजी शर्मा (खेडवाल)
एवं पूजनीय दादीजी स्व. श्रीमती रुकमणी देवी खेडवाल की
पुण्य स्मृति में **भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज** के
पावन चरणों में समर्पित है ।

- एडवोकेट कुन्दन शर्मा
सूरत, गुजरात

।। प्रकाशक की ओर से ।।

लम्बे समय से यह मन मे इच्छा थी कि कोई ऐसी पुस्तक प्रकाशित हो जिसमें हमारे नगर आराध्य " श्री लक्ष्मीनाथ भगवान " की महिमा का गुणगान हो और यह उन्ही की कृपा का प्रसाद है कि उनकी दिव्यता का वर्णन करने वाली यह भजन माला " श्रद्धा सुमन " तैयार हो सकी है ।

मैं यह पुस्तक अपने पूजनीय दादाजी स्व0 श्री राधेश्यामजी शर्मा (खेडवाल) व पूजनीया दादीजी स्व0 रूकमणी देवी खेडवाल की पुण्य स्मृति में, सदगुरूदेव के चरणों का ध्यान करते हुए, भगवान श्री लक्ष्मीनाथ जी महाराज के पावन चरणों में समर्पित करता हूँ ।

मेरे दादाजी स्वयं एक परम वैष्णव भक्त थे। ईश्वर की नियमित व निरन्तर आराधना ही उनके जीवन का ध्येय था। सुबह ब्रह्म मुहुर्त में उठकर तीन–चार घण्टे भगवान नारायण की उपासना में लगे रहना उनका नित्य नियम था । इसके अलावा रामचरित मानस व श्रीमद् भागवत महापुराण के स्वाध्याय की नियमितता हमें सदैव प्रेरणा देती रहेगी। गायत्री मन्त्र,गोपाल सहस्त्रनाम, विष्णु सहस्त्रनाम तो मानो उनका जीवन अवलंब थे । संक्षेप में कहूँ तो वे गृहस्थ मे रह कर भी गृहस्थ से विरक्त थे। उनका जीवन हमारे परिवार के लिये एक प्रेरणा पुँज है।

मेरी दादीजी श्री मति रूकमणी देवी एक सरल व सहज स्वभाव की स्नेहमयी गृहिणी थी। वे हमारे परिवार के लिये वात्सल्य की मूर्ति थी तथा धार्मिक जीवन में उनकी गहरी आस्था थी। सादगी की प्रतिमुर्ति हमारी दादीजी ने अपने कर्तव्य का पालन सदैव ही बडी सजगता व ह्रदय से किया है।

मेरे आदरणीय माता पिता ने भी सदैव उन्ही धार्मिक संस्कारो का संवर्धन करते हुये हम दोनो भाईयों में धार्मिक विचारो का बीजारोपण बचपन से ही किया है जिसके लिए मैं उनका सदैव ह्रदय से आभारी रहूँगा। इस पुस्तिका के प्रकाशन की कडी में भाईजी श्री सुशीलजी बजाज का भी भावनात्मक सहयोग सराहनीय रहा है, उसके लिये उनका आभारी हूँ ।

लक्ष्मीनाथ बाबा की अनुपम कृपा है कि इस भजन माला "श्रद्धा सुमन" के प्रकाशन का सुन्दर अवसर उन्होने दास को प्रदान किया है। आशा है कि इस पुस्तक का मनन ,पाठन करके मेरे इस छोटे से प्रयास में आप भी सहभागी बनेंगे ।

विनीत
एडवोकेट कुन्दन शर्मा (खेडवाल)–मो0नं0– 7048187962
चिरानियों का मोहल्ला , फतेहपुर शेखावाटी – सीकर (राज0)
हाल– वकालत , जिला एवं सत्र न्यायालय –सूरत (गुजरात)एवं गुजरात हाई कोर्ट।

।। नम्र निवेदन ।।

फतेहपुर नगर के नगर आराध्य श्री लक्ष्मीनाथ भगवान , जिन्हे नगर के लोग भाव भक्ति में भरकर ""लक्ष्मीनाथ बाबा " कह कर पुकारते हैं , उन्ही त्रिभुवनपति के चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम , वंदन, कोटिशः नमन।

लक्ष्मीनाथ बाबा की ही कृपा व प्रेरणा रही कि उन्होने मुझ जैसे क्षुद्र जीव को इस पुण्य कार्य का सुअवसर प्रदान किया जिसके लिए न मुझमें यह योग्यता है , न विद्वता है , न ज्ञान है और ना ही इतने पुण्य कर्म है कि मैं "बाबा" का गुणगान कर सकूँ क्योंकि ईश्वर तो गुणातीत , वर्णनातीत है परन्तु आप जैसे अनुभवी लोगो से सुना है कि " ईश्वर ज्ञान का नहीं भावना का भूखा होता है"।

बस ईश्वर के इसी करूणामय गुण का अवलम्बन लेकर बाबा के गुणगान करने का साहस जुटाया है । बस, यह एक भाव भरा प्रयास है । इन भक्ति गीतों की बाबा की कृपा से ही रचना हो पाई है। ये भक्ति गीत उनके ही श्री चरणों में ही समर्पित है। अवश्य ही, निश्चित ही मेरी लेखनी में अनगिनत त्रुटियाँ रही हैं। आप सभी से करबद्ध अनुरोध है ,याचना है कि मेरी इस भूल को अपने विशाल ह्रदय की उदारता से क्षमा करें इसके लिये मैं आपकी आभारी रहूँगी।

मेरी पूजनीया सासुमाँ श्रीमति रमादेवी जो कि भगवान श्री लक्ष्मीनाथजी की अनन्य उपासिका हैं। सुबह की आरती में जाना उनके जीवन का अभिन्न अंग है। बाबा में उनका दृढ विश्वास प्रेरणास्पद है। लक्ष्मीनाथ बाबा से सम्बन्धित बहुत से दृष्टान्त जानने व सुनने का अवसर भी मुझे उनके द्वारा प्राप्त हुआ है, जिसके लिये मैं उनकी ह्रदय से आभारी हूँ।

इस पुस्तक के प्रारम्भिक विचार से शुरू होकर, भजन लेखन से प्रकाशन तक मेरे पति व बेटी (एडवोकेट श्री कुन्दन शर्मा व नेहा शर्मा) ने जो प्रेरणा , सहयोग, मनोबल मुझे प्रदान किया है उसी के बल पर मैं बाबा का गुणगान करने का साहस जुटा पाई हूँ जिसके लिये मैं उन्हे ह्रदय से बारम्बार धन्यवाद देती हूँ , आभार व्यक्त करती हूँ ।

मेरे इस लेखन कार्य में मेरे स्वयँ के माता पिता ने मुझे समय–समय पर बहुत प्रोत्साहन दिया है । उनके इस स्नेहमयी आशीर्वाद के लिये उनको ह्रदय से प्रणाम, वंदन, आभार। मेरे अनुज श्री दिलीप शर्मा "विद्यानंदन" से समय समय पर मिले भावनात्मक प्रोत्साहन के लिए हार्दिक धन्यवाद व आभार ।

अन्त में मैं बाबा के श्री चरणों में यही विनती करती हूँ कि "हे करूणानिधान, हे भक्तवत्सल" मेरे प्रेम भाव से भरे इन " श्रद्धा सुमन " को अपने चरणों में स्वीकार कर मुझ पर अनुग्रह करें ताकि मेरा यह अति लघु प्रयास सार्थक बन जायें और किंकर स्वयं में धन्यता का अहसास कर सके ।

।। नहीं लेखनी में बल मेरे , बुद्धि बल से मैं हीन हूँ ।।
।। दया करो हे परम दयानिधि , मैं दुर्बल अति दीन हूँ ।।

।। सुमनलता शर्मा ।।

36.	वर्णन नहीं कर पाऊँ.....	39
37.	लक्ष्मीनाथ बन आने वाले.....	40
38.	प्रभु भजन की लागी.....	41
39.	मन मोह लियो थारी.....	42
40.	प्रभु थारो अद्‌भुत रूप.....	43
41.	लक्ष्मीनाथ बाबा जब.....	44
42.	दया करो हे लक्ष्मीनाथ.....	45
43.	बाबा थार दर्शन खातिर.....	46
44.	कब आस्यो हे गिरधर.....	47
45.	लक्ष्मीनाथ बाबा थे	48
46.	हर पल थारो ध्यान.....	49
47.	बाबा की भक्ति म भरकर.....	50
48.	प्रभु अब मुझको भी.....	51
49.	अब सौंप दिया इस जीवन.....	52
50.	लक्ष्मीनाथ किरपाधारी ने.....	53
51.	जीवन है श्वाँसो की.....	54
52.	भजो रे मन लक्ष्मीनाथ.....	55
53.	हे जगदीश्वर थार	56
54.	हे मन वीणा भक्ति.....	57
55.	सुन रे पागल मन	58
56.	ऐसे श्री लक्ष्मीनाथ.....	59
57.	लक्ष्मीनाथ बाबा तुम.....	60
58.	आज इसी पल भजलें.....	61
59.	हे करूणाकर दयानिधि.....	62
60.	दया करो हे लक्ष्मीनाथ.....	63
61.	मन प्रेम से आज.....	64
62.	भजन बिना कइयाँ बणसी.....	65
63.	हे लक्ष्मीनाथ दयाल प्रभु.....	66
64.	गणेश वंदना	67
65.	रे मन मेरे जाग जाग.....	68
66.	म्हे तो म्हारा बाबाजी का.....	69
67.	हरि भजन बिन मूरख	70
68.	मन म छा रह्‌यो हरष.....	71
69.	म्हे थान आज मनावाँ.....	72
70.	जनम जनम का याचक.....	73
71.	हे लक्ष्मीनाथ कृपाल.....	74
72.	छोड सकल जंजाल.....	75

73.	सौ सौ बार बधाई.....	76
74.	गुरू वंदना.....	77
75.	हे लक्ष्मीनाथ देवा.....	78
76.	प्रभु बिना हे पागल.....	79
77.	बडी देर भई ओ बाबा.....	80
78.	श्वाँस श्वाँस और उर.....	81
79.	हे लक्ष्मीनारायण रामा.....	82
80.	लक्ष्मीनाथ बाबा जपुँ.....	83
81.	रटो हे रसना लक्ष्मीनाथ.....	84
82.	सज धज कर मन्दिर में बैठा.....	85
83.	थार चरण कमल पर नाथ.....	86
84.	लक्ष्मीनाथ बिना, रघुनाथ बिना.....	87
85.	मेरे तो आधार लक्ष्मीनाथ.....	88
86.	मनै अबक बचाल्यो लक्ष्मीनाथ.....	89
87.	ऐसी मन की सोच बनादो.....	90
88.	प्रभु को पुकारो प्यारे.....	91
89.	गागर में सागर भरने की.....	92
90.	आरती का आनन्द लेकर.....	93
91.	जागो हे लक्ष्मीनाथ	94
92.	आये आये हरि जो कृपा.....	95
93.	चालो हे सखि मन्दिर म.....	96
94.	लक्ष्मीनाथ धणी किरपा कर.....	97
95.	मुझे तुमने बाबा	98
96.	सुरंगो श्रावण आयोजी.....	99
97.	हे लक्ष्मीनाथ दया करना.....	100
98.	शान्ति मंगलाचरण.....	101
99.	जिसका कोई नहीं जग में.....	102
100.	भक्तो के कारज सारे.....	103
101.	भाव भक्ति म भरकर बाबा.....	104
102.	सत्यम, शिवम, सुन्दरम.....	105
103.	थारो ही ध्यान बाबा.....	106
104.	मन वीणा पर गीत.....	107
105.	थान अरज सुणावां.....	108
106.	अपने श्री मुख से (कीर्तन)	109
107.	हर प्रार्थना के बाद में.....	110
108.	आरती श्री लक्ष्मीनाथजी की.....	111

जय श्री ठाकुर जी की
श्री गणेश वंदना

आओ आओ गजानन्द, थान आज बुलावाँ जी ।
गणपति गजानन थान, प्रथम मनावाँ जी ।
आओ आओ गजानन.....

वन्दन प्रथम गणेश को, और करूँ अरदास ।
आय बिराजो प्रथम तुम, पुरो सारी आस ।
थार चरणाँ म शीश झुकावाँ जी ।.....
आओ आओ गजानन्द.....

हे शिव गौरी के नंन्दना, रिद्ध सिद्ध के भरतार ।
दया दृष्टि हम पर करो , भर देना भण्डार ।
प्रभु थारा ही गुण गावाँ जी ।.....
आओ आओ गजानन्द.....

विद्या वारिध बुद्धि विधाता, मंगलमुर्ति दया निधान ।
भाव भक्ति से प्रसन्न हो, करना हम सबका कल्याण ।
निशदिन थारी हाजरी बजावाँ जी ।.....
आओ आओ गजानन्द .....

माँगु मैं कर जोड कर, बुद्धि विमलमति दीजिये ।
सदा रहुँ सतकर्म रत, कल्याणमयी गति दीजिये ।
थास भुक्ति मुक्ति "सुमन" पावाजी ।.....
आओ आओ गजानन्द थान.....

जय श्री ठाकुरजी की गुरू वँदना

गुरू देते है चाबी, भवसागर पार उतरने की ।
गगन मण्डल मे अमी झरत है, मगन होय रस पीने की ।।.....
.गुरू देते.....

गुरू समान दाता नही, गुरू मेरा सिरमौर ।
ईश तजे तो गुरू चरण, गुरू बिना नही ठौर ।
गुरू सिखाते है कला, मानव जीवन जीने की ।।.....
गुरू देते.....

गुरू को सिर पर राखिये , अरू विनवौ बारंबार ।
बुद्धि से नही पढ सके, गुरू सर्व सुक्त का सार ।
गुरू ज्ञान भंडार है , कर कोशिश भर लेने की ।। ....
गुरू देते.....

गुरू दया की खान है, गुरू है कृपा निधान ।
भाव भक्ति से तृत्प हो , गुरू करले आप समान ।
गुरू की शरण में आन पडा, नहीं चिन्ता अब तरने की ।।...
गुरू देते.....

जग के छोटे काज भी , गुरू बिना नही होय ।
पूरण गुरू की मौज से , मिलना प्रभु से होय ।
गुरू कृपा से ही सम्भव है, करनी नाम सिमरने की ।।....
गुरू देते.....

गुरू गोविन्द,गुरू ब्रहम है, गुरू देवन के देव ।
जग में कुछ दुर्लभ नहीं , जो मन से गुरू को सेव ।
करो कृपा अब राह बतादो, "सुमन" हरि से मिलने की ।।...
गुरू देते हैं चाबी ...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

फतेहपुर नगर बना है धाम, चहुँ ओर कीर्ति और नाम ।
लक्ष्मीनाथ तेरी महिमा से, बाबा तेरी महिमा से ।।.....फतेहपुर.....

. गर्भ गृह की अतुलित शोभा, अनुपम झाँकी और श्रँगार ।
दिव्य रूप की सुन्दर शोभा, वर्णन का नही कोई पार ।
खूब सजी फुलो की झाँकी , मन्दिर महक रहा सुषमा से ।
बाबा तेरी महिमा से.....
नगर सेठ कहलाते बाबा , सबकी झोली भरते हो ।
दर पे आता जो भी याचक, खुले हाथ लुटाते हो ।
याचक की दुविधा हरते बाबा, अपनी गरिमा से ।.....
बाबा तेरी महिमा से .....
प्रातः काल मन्दिर की शोभा, दर्शन से लगती प्यारी ।
बाबा के दर्शन की खातिर, श्रद्धा से आते नर नारी ।
हम तो सदा गुलाम है बाबा, तेरी भाव भंगिमा के ।
बाबा तेरी महिमा से .....
बुँदी ओर केसर का पेडा , रूचकर भोग लगाते हो ।
जब भी मौज बने बाबा की, छप्पन भोग सजाते हो ।
होता जीवन सफल "सुमन" का , शँखाजल की गरीमा से ।
बाबा तेरी महिमा से .....
फतेहपुर नगर बना है धाम .....

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल, अनोखी थारी झाँकी ।
अनोखी थारी झाँकी, अनोखी थारी झाँकी –2
बाबा दरशन पर बलिहार , अनोखी थारी झाँकी ।....
जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल.....
थार सिर पर मुकट बिराज, काना म कुण्डल साज –2
थार उर वैजन्ति माल, अनोखी थारी झाँकी ।.....
जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल.....
थार हाथ सुदर्शन साज , और संग म रमा विराज –2
थारो सुन्दर गरूड विमान, अनोखी थारी झाँकी ।.....
जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल .....
थान गा कर गीत जगाव , फिर बाल भोग अरपाव –2
छप्पन भोगाँ स कराँ मनवार , अनोखी थारी झाँकी ।.....
जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल .....
बाबो अन्तर खूब लगाव , नित नई पोशाक सजाव –2
थारा दरशन पर बलिहार , अनोखी थारी झाँकी ।.....
जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल.....
थारा वेद विमल जश गाव , और "सुमन" शीश नवाव –2
थारो फतेहपुर नगर गुलाम , अनोखी थारी झाँकी ।.....
जय श्री लक्ष्मीनाथ कृपाल.....

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

हे लक्ष्मीनाथ हे रमानाथ, हे वैकुण्ठ के राजा ।
तेरे भक्त खडे कर जोड पुकारे आजा, अब तो आजा ।.....
हे लक्ष्मीनाथ.....

जनम जनम के बिछुडे प्रभुजी, अबके लेवो मिलाय ।
भव सागर मेरी नाव अडी है, देवो पार लगाय ।
पतवार के खेवैया, उस पार हमे पहुँचाजा ।।.....
तेरे भक्त खडे कर जोड.....

म्हारे आगम से भगवान, फतेहपूर नगर बना है धाम ।
लक्ष्मी संग बिराजे ठाकुर, और सुन्दर गरूड विमान ।
कृपा करो हे नाथ ,अपनी सुन्दर झाँकी दिखलाजा ।।.....
तेर भक्त खडे कर जोड.....

तेरी सुन्दर और अलौकिक शोभा, चमत्कार का पार नही ।
उस निर्बल के सबल हाथ तुम, जिसका कोइ आधार नही ।
हे निर्बल के बल आकर ,अपना बल वैभव दिखलाजा ।।.....
तेरे भक्त खडे कर जोड.....

युगल जोडी के चरणाम्बुज पर, अर्पित मेरे भाव "सुमन" ।
कर लेना स्वीकार प्रभु तुम, मेरे ये शत शत वंदन ।
करो कृतार्थ नाथ, आज भक्ति की राह दिखाजा ।।.....
तेरे भक्त खडे कर जोड.....

हे लक्ष्मीनाथ हे रमानाथ , हे वैकुण्ठ के राजा .....

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

बाबा तेरे दर्शन पर, शत शत जीवन है बलिहार ।
कृपा करो पट खोलो बाबा, लेउँ तुम्हे निहार ।।.....बाबा.....
सुबह सुबह की आरती में , मिलती शान्ति अपार ।
शंखाजल की बुंदो से, भक्तो का लाड दुलार ।
जीवन सफल बनेगा तेरा, हिय से उसे पुकार ।।.....

बाबा तेरे दर्शन पर.....
जब हटता परदा मोहन से, दिखती है झाँकी अविराम ।
धन्य हुयी दरशन से बाबा, करती हुँ कर जोड प्रणाम ।
मेरी प्रार्थना हे मनमोहन, करलो अब स्वीकार ।।.....

बाबा तेरे दर्शन पर.....
लक्ष्मीनाथ हर संकट हरते, "सुमन" करे विश्वास अपार ।
सबकी झोली भरने वाले , त्रिभुवन पति को नमस्कार ।
बिन मांगे झोली भर देते , बाबा ऐसे परम उदार ।।.....

बाबा तेरे दर्शन पर.....
कृपा करो पट खोलो बाबा .....

यो तिरलोकी को नाथ, दास पर किरपा धारी रे ।
म्हार नगर म आय बिराज्यो जी, ओ गिरवर धारी रे ।.....
ओ तिरलोकी को नाथ.....

माँ लक्ष्मी लीनी साथ , गरूड की करी सवारी रे ।
कियो गौरू भक्त निहाल, प्रभु थारी महिमा न्यारी रे ।
यो तिरलोकी को नाथ .....

खुद स कही जगाय , साथ म तेर चालूंगा ।
अब होज्या तु निश्चिन्त, तेरी हर विपद मिटा दुंगा ।
सुध बुध दई बिसराय , नाथ थारी छवी निहारी रे ।.....
यो तिरलोकी को नाथ .....

जब स आय बिराज्या स्वामी, नगर बन्यो गोलोक रे ।
जो कोई ध्याव तन ओर मन स, हरले सारा शोक रे ।
"सुमन" सुबह की आरती पर, सब कुछ बलिहारी रे ।.....
यो तिरलोकी को नाथ.....
म्हार नगर म आय .....

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

भजले तु लक्ष्मीनाथ , जपले तु लक्ष्मीनाथ ।
तेरा होगा बेडा पार , तु जपले लक्ष्मीनाथ ।।.....
मत समझो मात्र मुरतिया , ये तीन लोक का स्वामी ।
तुम हिय से करो पुकार , ये सबका अन्तरयामी ।
भज आठो याम इक नाम , तु जपले लक्ष्मीनाथ ।.....
भजले तु लक्ष्मीनाथ .....

ये गिरवर धारी श्याम , यही कंस बकासुर काल ।
ये ही नाग नथैया श्याम , ये मीरा को गोपाल ।
यो जग को पालनहार , तु जपले लक्ष्मीनाथ ।.....
भजले तु लक्ष्मीनाथ .....

यशोमति को कान्ह कन्हैया , गोपियन को माखन चोर ।
वृन्दावन रास रचैया , श्री राधे को चित्त चोर ।
अब "सुमन" कहे पुकार , तु जपले लक्ष्मीनाथ ।.....
भजले तु लक्ष्मीनाथ .....
तेरा होगा बेडा पार .....

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

रे मत बरस इन्दरराज, म्हे दरशन खातर जावाँ ।
म्हे दरशन खातर जावाँ , बाबा न खूब रिझावाँ ।
रे मत बरस इंन्दरराज .....

लक्ष्मीनाथ का सज्या हिंडोला , नगर म उत्सव भारी जी ।
सुन्दर रूप म सज्यो है बाबो, लेवा नजर उतारी जी ।
सखियो ल्यावो राई लूण , बाबा की नजर उतारा ।.....
रे मत बरस इंन्दरराज .....

सज्यो अनोखो फूल बंगलो , महक उठयो मंदर सारो ।
झुला पर जद आय बिराज्यो, लक्ष्मी संग बाबो म्हारो ।
आओ जी भर लेवो निहार , आन देख देख सुख पावा ।...
रे मत बरस इंन्दरराज .....

सावण का झुला की शोभा, बरणन करी न जाय ।
बाबा की या सुन्दर शोभा , "सुमन" निरख सुख पाव ।
ब्याह की सी लागी धूम , सब आवो खुशी मनावाँ ।.....
रे मत बरस इंन्दरराज .....
म्हे दरशन खातर आवाँ .....

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

मेरे लक्ष्मीनाथ दयाला , तेरा त्रिभुवन मे छाया राज है ।
सोहे वेश पिताम्बर नीको,कर मे सुदर्शन साज है।।..
मेरे लक्ष्मीनाथ.....

जब जब संकट आया भक्तो पर , बीच में आकर आप खडे।
भव जल तारण, पतित उद्धारण, पल में कारज सबके सरे ।
सिद्ध करता तु भक्तो के काज है, हम सबका तु ही सरताज है।..
सोहे वेश पिताम्बर नीको .....

जल मे ,थल मे,और गगन मे, त्रिभुवन मे तेरी माया है ।
डुबा है जब जहाज भगत का , अँगुली पर तैराया है ।
सुर नर मुनी न पाते पार है, उसे भक्तो ने बाँध लिया आज है ।.....
सोहे वेश पिताम्बर नीको .....

बडी दूर से पधारे बाबा, हम पर किया उपकार है ।
किस मुख से मै बरणु बाबा, तेरे कितने चमत्कार है ।
आओ देर करो ना अब तुम, तेरे हाथो मे मेरी लाज है ।.....
सोहे वेश पिताम्बर नीको .....

सावन के झुलो मे देखो , बाबा कैसा सजता है ।
संग मे लक्ष्मी गरूड बिराजे, तेरा रूप मनोहर लगता है ।
गाकर तुम्हारी महिमा , हुयी धन्य "सुमन" यह आज है ।....
सोहे वेश पिताम्बर नीको .....
मेरे लक्ष्मीनाथ दयाला .....

बाबा की म्हान , याद घणी आव ।
यो हिवडो भर भर आव म्हारा राज ।।.....बाबा की.....
बाबाजी थारी फतेहपुर नगर म शोभा – 2
म्हार मन न मोह ले ज्याव, म्हारा राज ।.....बाबा की म्हान .....
बाबा थारी झाँकी दरशन की खातिर –2
भक्त दूर देश स आव, म्हारा राज ।।.....बाबा की .....
ओ बाबा थे तो जीमो ना, छप्पन भोग –2
थारी बिडला स कराँ, मनुहार म्हारा राज ।।....बाबा की .....
ओ बाबा थान, पेडो घणो भाव – 2
थान बाल भोग मे अरपाँ, गुलकन्द म्हारा राज ।।.....बाबा की ....
ओ बाबा थार , नित नइ चढ पोशाक –2
भक्ता क मन की, पूरो थे आस , म्हारा राज ।।.....बाबा की.....
ओ बाबा थार, चरणा म घणी अरदास –2
म्हारा बिगड्या कारज सारो , म्हारा राज ।।.....बाबा की.....
ओ बाबा थान "सुमन" बुलाव, कर जोड – 2
थे किरपा कर पधारो , म्हारा राज ।।.....बाबा की.....
यो हिवडो भर भर .....

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

बाबा तेरे दरशन की, एक झलक जो मिल जाये ।
सच कहती हूँ मैं बाबा , सारी पीडा ही टल जाये ।.....
बाबा तेरे दरशन की.....
बडी दूर से आकर बाबा, फतेहपुर नगर बिराजे ।
लिये सुन्दर गरूड विमान, सँग मे रमा भवानी राजे ।
बाबा तेरेश्शंखाजल की, कुछ जलकण जो मिल जाये ।.....
सच कहती हूँ मैं बाबा .....
सावन के झुलो में , मेरा बाबा ऐसा सजता है ।
सच में मेरा बाबा तब , प्यारा दुल्हा लगता है ।
उस युगल जोडी की गर, इक झलक जो मिल जाये ।.....
सच कहती हूँ मैं बाबा .....
होली के उत्सव पर बाबा, बडी मौज में आता है।
अपने प्यारे भक्तो पर, रंग अबीर उडाता है।
फूल डोल के उत्सव का"सुमन" ,दर्शन जो मिल जाये ।
सच कहती हूँ मैं बाबा .....
बाबा तेरे दरशन की .....

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

आओ लक्ष्मीनाथ , आओ लक्ष्मीनाथ ।
आज मेरे अँगना में , आओ लक्ष्मीनाथ ।
अँगना म आवो , संग लक्ष्मीजी को लाओ – 2
ये मोहन मुरतिया , दिखाओ लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ ...

अँगना म आवो, छप्पन भोग सजावो – 2
थे रूच रूच भोग, लगावो लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ...
भोग लगावो, थार भक्ताँ न रिझावो –2
यो थार ही काज, बनायो लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ....

प्रेम से पोशाक ल्याई, भाव को प्रसाद ल्याई –2
थे धारो, और, दरश दिखाओ लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ.....
थारी आरती उतारूँ, थाँ पर तन मन वाँरा – 2
थे तो भव सागर स पार, उतारो लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ...

थे तिरलोकी का स्वामी, भक्ताँ का अन्तरयामी – 2
हिरदे म आय, बिराजो लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ.....
महिमा थारी अपरम्पार, "सुमन" जावा म्हे बलिहार – 2
थान प्रेम क पाश म, बाँधा लक्ष्मीनाथ ।।.....आओ लक्ष्मीनाथ....
आज मेरे अँगना मे ....

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

हरी भूल गया मैं, अपना कोल ।
हे नाथ दया कर , मन की आँखे खोल ।।... हरी भूल ...

हे लक्ष्मीनाथ दया के सागर, छलका दो निज नेह की गागर ।
प्रभु दो अन्तर के पट खोल ।।... हरि भूल...

करूणाकर अन्तरयामी , यघपि हुँ मै खल और कामी ।
तेरी सेवा मे ही खरचू , साँसे ये अनमोल ।।... हरि भूल...

हूँ मै तेरा दास एक किकंर , दया करो मुझको अपना कर ।
तुमको बिकते देखा है , सिर्फ प्रेम के मोल ।।... हरि भूल...

तेरी महिमा का नही पार , तु है विष्णु रूप साकार ।
दर्शन तेरे कर पाउँ मै, दिव्य चक्षु दे खोल ।।... हरि भूल...

कर जोड खडे करते है विनती , हर लेना प्रभु दुख और विपत्ति ।
मन मे भर दो एक भावना , गाउँ हरि नाम के बोल ।।...
हरि भूल....

तेरे दर्शन का सुख मिल जाये , जीवन का हर दुख मिट जाये ।
"सुमन" करे कर जोड प्रार्थना , राह अगम की खोल ।
हरि भुल गया मैं अपना कोल...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

बैठ हरी के चरणों मे, नारायण भजना है ।
भरा हुआ जो संशय उर मे, सारा तजना है ।।... बैठ हरि...

हे लक्ष्मीनाथ कृपाल हरी , मेरे जीवन मे इतना कर दो ।
मेरे कातर, दुर्बल मन मे तुम, भक्ति का संबल भर दो ।
समर्पण आज प्रभु के चरणो मे करना है ।... बैठ हरी के ...

भक्ति की उपमा से पिघले, मेरे मन को कर दो नवनीत ।
मन मे बस एक भाव सजा दो, तु ही है एक सच्चा मीत ।
उसी मीत के चरणो मे स्वयं को अर्पण करना है।
बैठ हरी के चरणो मे...

प्रातः काल जब पट खुलते, दर्शन पर जाते बलिहार ।
निरखे नही अघाते नयना, तेरा सुन्दर रूप श्रंगार ।
दर्शन का आनंद आज नयनो मे भरना है।... बैठ हरी के...

शंखाजल की बुंदो को हम, कहते है अमृत बरषा ।
बाल भोग को पाकर स्वामी, भक्तो का है मन हरषा ।
"सुमन" उसी दर्शन के बल, भवसागर तरना है।...
बैठ हरी के चरणो में ...

भरा हुआ जो संशय मन में ...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

तेरी हीरा जैसी श्वाँसा, बातो मे मत ना गवाँय ।
भजले लक्ष्मीनाथ हरी, रटले लक्ष्मीनाथ हरी ।। ... तेरी हीरा...

दो दिन का है जीवन पगले, पता नही कब जाये ।
बाहर मे जो श्वाँसा निकली, ना जाने फिर आये ।
चेत करो अपने जीवन मे, प्रभु से चित्त लगाय ।...
तेरी हीरा जैसी श्वाँसा...
भजले लक्ष्मीनाथ हरी ...

जब से आय बिराजे बाबा, नगर मे आनंद बरसा जाये ।
आपका दर्शन आनंद लेने , हर जन तरसा जाये ।
प्रेम के लोचन खोल के प्राणी, हिरदे माय बिठाय...
तेरी हीरा जैसी श्वाँसा...
भजले लक्ष्मीनाथ हरी....

भक्ति के धागो मे भाइ, मुक्ता प्रेम के पोये ।
एसी कृपा करो हे बाबा , याद मे मनवा रोये ।
अर्पित मेरा स्नेह निमंत्रण , श्रद्धा "सुमन" चढाये ...
तेरी हीरा जैसी श्वाँसा...
भजले लक्ष्मीनाथ हरी...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

ओ लक्ष्मीनाथ सुजान आज, किरतन म आयो जी ।
थान निरख निरख कर नाथ, हृदय मेरो हरषायो जी ।...

ओ लक्ष्मीनाथ सुजान...

थे तो सुन्दर पोशाक बनाओ , जिम सलमा तारा जडवाओ –2
म्हे मन स करा पुकार , नाथ ईन तन पर धारोजी –2

ओ लक्ष्मीनाथ सुजान...

म्हे केला गुलकंद मंगायो , और सीरो गरम बनायो –2
म्हे आँख मूँद कर टेरा नाथ, थे भोग लगावो जी –2

ओ लक्ष्मीनाथ सुजान...

प्रेम से हो रही आरती थारी, मगन ठाडया सब नर नारी –2
थार मधुर करयो श्रंगार , नाथ एक झलक दिखाओ जी–2

ओ लक्ष्मीनाथ सुजान...

नाथ म्हारी पीडा हर लीज्यो , पुरण हर मनसा कर दीज्यो –2
"सुमन" कर ह्रदय स अरज, नाथ थे बेगा आओजी –2

ओ लक्ष्मीनाथ सुजान...
थान निरख निरख ....

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

हाँ हाँ जी म्हारो प्यारो लक्ष्मीनाथ ।
वांरी जी म्हारो सुन्दर लक्ष्मीनाथ ।।...
थारो ही तो है जीवन धन , थार पर अर्पण तन मन धन –2
पण प्रेम की डोर म, बँध गया नाथ ।।...

हाँ हाँ जी म्हारो ...

एक दृष्टि से सृष्टि रचाव , सार जग को भरण कराव –2
हाँ प्रेम क बस बो, नाच रहयो है आज ।। ...

हाँ हाँ जी म्हारो ...

माँ लक्ष्मी जी चरण दबाव , चारूँ वेद बिमल जश गाव –2
लेल्यो शरण म्हान, कर द्यो सनाथ ...

हाँ हाँ जी म्हारो प्यारो...

थान सुन्दर पोशाक पहरांवाँ , हीराँ को थार मुकट सजावाँ –2
रही अधराँ पर थार मुरली विराज ।...

हाँ हाँ जी म्हारो ...

प्रेम स बाल भोग अरपावाँ , रूच रूच छप्पन भोग जिमावाँ –2
आओ थान "सुमन", उडीक आज ।...

हाँ हाँ जी म्हारो प्यारो ...
वांरी जी म्हारो ...

जय लक्ष्मीनाथ नमामी, नमामी, लक्ष्मीनाथ नमामी ....
करती हुँ अरदास ह्रदय से , हरलो मन के भ्रम और हानि–2
जय लक्ष्मीनाथ नमामी, नमामी ...

जग तारण , भव भय हारण प्रभु , तव चरणोदक गंगा महारानी ।
भक्ति का एसा वर दे दो , जीवन बन जाये अमर कहानी ।।...
जय लक्ष्मीनाथ नमामी, नमामी...

नगर फतेहपुर तुम पर बलिहारी, तव महिमा नही जाय बखानी ।
भव बंधन से पार करो अब , विंनती करते हैं हम स्वामी ।।...
जय लक्ष्मीनाथ नमामी, नमामी ...

सुन्दर झाँकी श्रृंगार मनोहर , ये श्रद्धा "सुमन" चरण लपटानी ।
भाव भोग का भोजन करलो , हे करूणाकर अन्तरयामी ।।...
जय लक्ष्मीनाथ नमामी, नमामी ...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

लक्ष्मीनाथ विरह का ताप हरो, बस इतना कहना है–2
प्रभु आपके चरणो में यह भाव चढाना है ।।
लक्ष्मीनाथ विरह का ताप...
हे लक्ष्मीनाथ सरकार, तोहे बिनवो बारंबार ।
मेरे रूखे उर में भर दो , भक्ति रस की धार ।
मुझे भाव भक्ति की धारा में, बहते रहना है ।...
लक्ष्मीनाथ विरह का ताप...
मैं कठोर तु अति कोमल है, मैं सूखा तु प्रेम का दरिया ।
बहत जात हुँ जगत जाल में , कृपा करो अब पकडो बैयाँ ।
मुझे पाप से नित नित डरते रहना है ।...
लक्ष्मीनाथ विरह का ताप...
तु निराकार साकार बना है, जी भर कर करदुँ श्रंगार ।
छप्पन भोग सजाया स्वामी, आओ आरोगो इक बार ।
मुझे भक्ति भाव से तेरी ,सेवा में रहना है ।...
लक्ष्मीनाथ विरह का ताप...
भक्ति सूत्र में जिसे पिरोया , वो भाव "सुमन" हैं मेरे ।
चुभ न जाये मेरे प्रभु को, कोमल चरण हैं तेरे ।
मुझे अबकी बार उबारो स्वामी, बस इतना कहना है ।...
लक्ष्मीनाथ विरह का ताप हरो...
प्रभु आपके चरणो में यह ...

लक्ष्मीनाथ दया के धाम, तुमको कोटि कोटि प्रणाम ।
भजले रसना हरि गुण नाम , पुरे होंगे तेरे काम ।...
बहुत जनम बीते हैं बाबा , अब कृपा करो करदो कल्याण ।
हारे का बस तुम हो विश्राम ...
लक्ष्मीनाथ दया के धाम ...
पल पल हम तेरा गुण गायें, प्रातः काल दर्शन को आयें ।
जीवन एकनिष्ठ बन जाये, चरणों में अर्पण हो जाये ।
रहे तुम्हारा हर पल ध्यान ...
लक्ष्मीनाथ दया के धाम...
जीवन में बस एक लालसा, बार बार दर्शन की आशा ।
करूणाकर बस इक अभिलषा , हो मेरे उर में तेरा बासा ।
आश्रय दो अब दयानिधान ...
लक्ष्मीनाथ दया के धाम ...
एक याचना चरण धरूँ , बाबा कर देना उद्धार ।
श्रद्धा सुमन अर्पण करूँ, कर लेना स्वीकार ।
मोहे दया कर दीजिये, चरण शरण का दान ।
लक्ष्मीनाथ दया के धाम ....
भजले रसना हरि गुण नाम...

लेवाँ नजर उतार बाबा , थारी लेवाँ नजर उतार ।
सावण का महिना म बाबा, खूब सज्यो दरबार ...
लेवाँ नजर उतार ...
झूलो पड्यो रेशम डोर को, हीरा मोत्याँ को सिणगार ।
झूल रह्या लक्ष्मीनाथ जी , कोई लेवाँ नजर उतार ।
बिनती सुण राजी होयाजी, कोई आया ठाकुर पधार ।...
लेवाँ नजर उतार...
झूला पर थे बिराजिया, सारी नगरी वारी जाय ।
मोहनी छवीं न निहारता, यो जनम बलिहारी जाय ।
भाव भक्ति स राजी होया , बाबा थे तो परम उदार ।...
लेवाँ नजर उतार ...
देख मन्दर की सोणी सुषमा, ले परसादी को आनन्द ।
हम मगन हुए हैं आज , पाकर पुरण परमानन्द ।
आज यो ही वरदान द्यो जी, खोलो भक्ति का द्वार ।....
लेवाँ नजर उतार ...
लक्ष्मी संग बिराजे ठाकुर , रूप मोहनी डाल रह्या ।
उत्सव का बहाना स , भक्ता न दुलार रह्या ।
भक्ति बिना "सुमन" अब म्हान, कुछ नाही स्वीकार ।
लेवाँ नजर उतार...
सावण क महिना म बाबा...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

नगर म धूम मची भारी, शरद की रात आई है ।
दरश हित भीड मची भारी, रास की रात आई है ।...
नगर म धूम मची भारी ...

सज्यो सफेद फूल बंगलो, खुशबु फैली भीनी भीनी ।
पुरब चन्द सो सज्यो है बाबो , श्वेत पोशाक धारण कीनी ।
धोळी धोळी उजली आभा , मन्दिर म रौनक छाई है ।...
नगर म धूम मची भारी ...

पूरण मासी को चाँद सरीसो, बाबो चमचम चमक रह्यो ।
भक्ता क हिवडा म बाबो, बणकर भक्ति दमक रह्यो ।
बाबा क दरशन की आभा , सब क मन म समाई है ।...
नगर म धूम मची भारी ...

मन्दिर म यूँ महक रही , रबडी की मीठी गन्ध ।
घुटा रह्या है भक्तगण, लेकर क आनन्द ।
भक्तो क मन म आज , खुशी की लहर आई है ।...
नगर म धूम मची...

शेखावाटी धरा पर निपज , बाबा न अरपण तरबूज ।
श्वेत कमल सी झाँकी प्रभु की, "सुमन" आज सजी है खूब ।
झाँकी क दरशण की खातिर , भक्त मण्डली आई है ।...
नगर म धूम मची भारी ...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

आओ मिलकर संग चलें हम, लक्ष्मीनाथ के द्वारे ।
माँ लक्ष्मी के संग प्रभुजी, आओ हृदय हमारे ।।...आओ...

कार्तिक मास अमावस तिथि, लक्ष्मीपूजन का दिन सुन्दर ।
प्रभु से ज्यादा माँ की जय का , गूँज रहा है अनुपम स्वर ।
शरणागत हो जा दोनो की–2, वो जीवन आप सँवारे ।।...आओ..

प्रभुजी आज मान दे रहे , खुद से ज्यादा माँ को ।
भक्तो ने भी आज मनाया , प्रभु से ज्यादा माँ को ।
प्रभु भी आज मुदित मन से–2, भक्तो के भाव निहारें ।।...आओ...

मन्दिर में चहुँ ओर दिख रहा, माँ का वैभव सारा ।
मन्द मन्द मुसकाता है वो , लक्ष्मीनाथ हमारा ।
मुझको चाहते या वैभव को–2, मन में आज विचारे ।।..आओ...

देख देख करणी भक्तों की, बाबा भी इठलाता है ।
आज पूजता लक्ष्मी को ,जो मुझको रोज पूजता है ।
फिर भी दाता दयासिन्धू वो , सबकी पूजा स्वीकारे ।।...आओ...

पर हम तो अद्वेत हैं दोनो, सोच बाबा मुसकाते हैं ।
हो प्रसन्न अपने भक्तों पर , खुले हाथ लुटाते हैं ।
गूढ प्रेम की भरी नजर से –2 , करते वारे न्यारे ।।...आओ...

प्रेम भाव से भर नर नारी , श्रद्धा "सुमन" चढाते है ।
जो भी आता मन उपवन में , मांग मांग ले जाते है ।...आओ...

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

आओ मिलकर सच्चे मन से , लक्ष्मीनाथ मनायेंगे ।
प्रेम पाश में बांधो प्रभु को , दौड के बाबा आयेंगे ।...

आओ मिलकर सच्चे मन से...

लक्ष्मीनाथ मनालो भाई , लक्ष्मी साथ में आयेंगी ।
बाबा ने अपनाया तो फिर , माँ भी गले लगायेंगी ।
यदि प्रेम से पूजा हरि को , सच्चा आनंद मनायेंगे ।।...

.आओ मिलकर...

पूरण परमानन्द मनाओ , सारे आनंद आयेंगे ।
कहाँ कोई बच जायेगा जब, सच्चिदानन्द पधारेंगे ।
थोडा भी यदि जतन किया, प्रेम सिन्धु में न्हायेंगे ।।...

आओ मिलकर...

उर से, मन से , चित्त वृत्ति से, नारायण का ध्यान करो ।
नारायण से मिलना है बस , लक्ष्य यही संधान करो ।
अपने तन के रोम रोम से , प्रभु तेरे गुण गायेंगे ।।...

आओ मिलकर...

आठों याम यही हो उर में, लक्ष्मीनाथ से मिलना है ।
श्वाँसों ,श्वाँस उसी का सिमरन, इसी भाव में टिकना है ।
तो एक दिन नारायण भी, सच में तुम्हे बुलायेंगे ।।...

आओ मिलकर...

कर से करलो प्रभु की सेवा, श्रद्धा "सुमन" चढावो ।
प्रेम पाश में बाँधो उसको , न ज्ञान का पाठ पढावो ।
निश्चल प्रेम से यदि पुकारो , दौडे प्रभुजी आयेंगे ।।...

आओ मिलकर...

प्रेम पाश मे बाँधो प्रभु को .....।।

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

हाथ जोड अरजी करूँ बाबा, करियो थे स्वीकार ।
जैसा हूँ अपनावो बाबा , मत करियो इंकार ।।..

हाथ जोड...

दो सखियां मिल बात करी , गावाँ बाबा का गुणगान ।
एक मनौती मांग रही , बाबो करसी पुरा काम ।
म्हार उर म बस रह्यो , लक्ष्मीनाथ सरकार ।।..

हाथ जोड...

हीराँ जडी पोशाक चढाऊँ , मेवा स करूँ मनवार ।
केसार खीर जीमाऊँ बाबा , छप्पन भोग स जिमनवार ।
हाथ जोड विनती करूँ बाबा , आरोगो करतार ।।...

हाथ जोड...

जो थे मनसा पूरो बाबा , अरपूँ पेडा रो थाळ ।
अपण हाथ बनाय जी , थार गल फुलाँ की माल ।
हार लियाँ हाजर खडी बाबा , लेवो उर पर धार ।।...

हाथ जोड...

लक्ष्मीनाथ दातार यो जी , खड्यो लुटाव मौज ।
अँखियाँ तो चुंधिया गयी, देख बाबा को ओज ।
बाबा थारी मौज प थारा , भक्त जाव बलिहार ।।...

हाथ जोड...

भक्त खड्या गुण गा रह्या, करज्यो पूरी आस ।
हाथ जोड विनती करूँ , द्यो चरणाँ को विश्वास ।
"सुमन" की बस एक प्रार्थना , म्हार हिय म करो विहार ।।...

हाथ जोड...

जैसा हुँ अपनावो बाबा .....

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

थान ध्याकर लक्ष्मीनाथ , मन म छा गयो जी आनन्द ।
मन म छा गयो जी आनन्द, उर म छा गयो जी आनन्द ।।...

थान..

एक समय मन मायन , सखियाँ कर्‌यो विचार ।
सब सखियाँ मिल चालस्या , बाबा लक्ष्मीनाथ दरबार – 2
लेस्या दरशन को आनन्द , मन म छा गयो जी आनन्द ।।...

थान...

मन्दिर सज्यो फुलाँ स बाबा , महक रह्‌यो दरबार ।
झाँकी थारी मन मोहनी जी , खूब कर्‌यो श्रंगार ।–2
फैली चारो ओर सुगन्ध , मन म छा गयो जी आनन्द ।।...

थान...

बाबा थारी पोशाक पर, म्हारो चित्त गयो बलिहार ।
हीराँ मुकट माथ सज्यो , लेऊँ नजर उतार – 2
निरखाँ प्यारो गोकुलचन्द , मन म छा गयो जी आनन्द ।।...

थान...

लक्ष्मी संग बिराज्‌यो बाबो , हँस हँस कर विहार ।
भक्ता की पीडा हरी , बाँकी मनसा करी स्वीकार ।
बाबो पूरण परमानन्द , मन म छा गयो जी आनन्द ।।...

थान...

नगर प्रेम से भर रह्‌यो जी , दरशन पर जाव बलिहार ।
घणीं करूँ आराधना जी , "सुमन" जोडो चरणाँ स तार ।
म्हान थारो ही अवलम्ब , मन म छा गयो जी आनन्द ।।.....थान.....
मन म छा गयो जी आनन्द ....

।। जय श्री ठाकुर जी की ।।

भक्तो की विनती सुनकर , प्रभु दौडे आते है ।
मिलकर के जब भक्त , बाबा को भोग लगाते है ।।...

भक्तों...

आरोगो नरसिंहा, जब ये भजन गुंजता है।
वैकुण्ठ छोडकर तब मेरा , नाथ दौडता है।
भक्ति भाव मे भरकर , जब हम विनती करते है।...

भक्तो की विनती सुनकर ...

भक्तो की नम्र विनन्ति पर ,वह भोग लगाते है।
प्रेम से तुलसी पत्र मे ही, सब कुछ पाते है।
वे सर्वेश्वर बाबा , प्रेम के लिये तरसते है।...

भक्तो की विनती सुनकर ...

दो डग मे त्रिलोकी नापी , आकर वामन वेश मे ।
वो लक्ष्मीनाथ बंधा है देखो , प्रेम के परिवेश मे ।
हाजिर सदा खडा रहता है, जो मन से भजते है ।...

भक्तो की विनती सुनकर ...

प्रेम भाव से भरकर खाये , करमा बाई का खिचडा ।
गवालजी से पेडा ल्याये , देकर के निज का कडा ।
"सुमन" हरी तो सदा भाव का भोजन करते है।...

भक्तो की विनती सुनकर ...

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

देखो प्रभु को सुला रहा , यह भक्त अनोखा है ।
भक्ति मे बँध जाते हरी , ये सबने देखा है ।।...

देखो प्रभु...

शयन आरती मे जब , भजन गुँजता है।
भक्तो की विनती पर , मेरा बाबा सोता है।
देखो लक्ष्मीनाथ प्रभु तो , प्रेम का भुखा है।...

देखो प्रभु को सुला रहा...

लक्ष्मीनाथ दया का सागर , बिक गया भक्त के प्यार में ।
खुद को ढुंढ रहा है वह तो , गोपियन के अभिसार में ।
प्रेम बिना भक्ति का सागर , एकदम सुखा है ।...

देखो प्रभु को सुला रहा...

नरम नरम रेशम का गद्दा, भक्त ने ह्दय परोसा है।
उर का कोमल तकिया देकर , भक्तो का मन हरषा है।
भक्त और भगवान का , यह तो प्रेम अनोखा है।...

देखो प्रभु को सुला रहा...

गाकर लोरी सुनाऊँ बाबा , मिलता हो विश्राम जो ।
सारी रात पंखा झेलु बाबा , पाओ विश्राम तो ।
प्रेम दृष्टि से निर्मल करदो , "सुमन" ह्रदय जो सूखा है।...

देखो प्रभु को सुला रहा...
भक्ति मे बंध जाते हरी...

।।जय श्री ठाकुर जी की ।।

हे नाथ कृपा सिन्धू मेरी , मानस पूजा स्वीकार करो ।
हे लक्ष्मीनाथ दया के सागर , मन में आप विहार करो ।।...

हे नाथ.

साँचा मोत्याँ को हार बणाऊँ , जिम बीच म लाल सजाऊँजी ।
करद्यो ऐसी विमल कृपा , मेरा हाथाँ स पहराऊँजी ।
हे प्रभु मेरे , मन , मोती को स्वीकार करो ।।...

हे नाथ...

मोतीयन बाजुबन्द बणाऊँ , लक्ष्मीनाथ की भुजा सजाऊँ ।
मोतीयन कर्णफुल बनाकर , बाबा न मैं घणो सजाऊँ ।
प्रभु अब करके कृपा ,आओ अंगीकार करो ।।...

हे नाथ...

मोतीयन मुकुट सजाऊँ ठाकुर , बंशी पर मुक्ता माल जी ।
जडद्यु मोतियन पोशाक थारी , पहरो थे तो लाल जी ।
बाट उडिकू बाबा थारी , आकर थे श्रंगार करो ।।...

हे नाथ...

मोत्याँ स सज्यो है बाबो , मुक्तामणी छैल बिहारी जी ।
दो पल ठाडो लक्ष्मीनाथ जी , लेऊँ नजर उतारी जी ।
करती "सुमन" प्रार्थना बाबा , मेरा भी उद्धार करो ।।...

हे नाथ...

हे नाथ कृपा सिन्धु मेरी...
हे लक्ष्मीनाथ दया के सागर ...

हे अखिलेश नमामी नमामी ।
हे करूणाकर तुम्हे नमामी ।...
भोर भई अब जागो ठाकुर, जागो बाबा लक्ष्मीनाथ ।
चिडियाँ भी अब बोलण लागी ,पौं फाटी जागोजी नाथ ।
म्हार भक्ति भाव जगावो स्वामी । ...

हे अखिलेश नमामी...

भक्त खडे कर जोड नाथ अब, अलसन्ती अँखिया खोलो ।
थार बिन बडी सून लगत है , दरशन द्यो अब पट खोलो ।
अब सुनो पुकार हे अन्तरयामी । ...

हे अखिलेश नमामी...

सोना की झारी मुँगा को दातण , लेकर नाथ खडी हाजर ।
अखियाँ मसलो, भुजा मरोडो , दतवन करल्यो जी उठकर ।
भक्तों का मान बढाओ स्वामी । ...

हे अखिलेश नमामी...

बागो धारो मुकट सवाँरों , भक्तां न दरश दिखाओ जी ।
जागो अब तिरलोकी नाथ , ज्यादा मत तरसाओ जी ।
अब दरशन द्यो बेग पधारो स्वामी । ...

हे अखिलेश नमामी...

हे करूणा कर तुम्हे नमामी ...

म्हार सिर पर रखद्यो बाबा , थारी कृपा का दोनूँ हाथ ।
थारी महिमा गाणो चाऊँ , थार बल पर हे रघुनाथ ।...

म्हार सिर पर ...

जागो लक्ष्मीनाथ स्वामी , जागो कुँवर कन्हाई जी ।
आँख खोल कर देखो स्वामी , बाल भोग मैं ल्याई जी ।
भाव स करूँ पुकार , जीमो जी लक्ष्मीनाथ ।...

म्हार सिर पर रखद्यो ...

बीती रात मैं जागी स्वामी , प्रेम स कर्यो बिलोवणो ।
थार प्रेम म मथकर काढ्यो , माखन घणो सलोवणो ।
हाँ हाँ करो कृपा थे, पावो नाथ ।...

म्हार सिर पर रखद्यो...

अरज करूँ सतवन्ता ठाकुर , माखन मिश्री करो कलेवो ।
जैयाँ अरज करी मैं मन स , बैयाँ ही मुख म धर लेवो ।
प्रभु मुझ अनाथ को करो सनाथ ।...

म्हार सिर पर ...

माखन मिश्री पाल्यो स्वामी , सीरो बणाऊँ गरम गरम ।
कदली फल को बाल भोग ल्यो, गुलकंद की काईं शरम ।
कहीं बने वैकुण्ठ अधिपति, "सुमन" कहीं पर दीनानाथ ।...

म्हार सिर पर ...

थारी महिमा गाणो चाऊँ...